

# वचन का तीर

वाराणसी के चौक बाजार में लक्ष्मी निवास नामक भव्य हवेली के सामने एक बग्घी आकर रुकी। उसमें से एक धनाढ्य सेठ ने उतरकर पूछा—



तभी सेठ लक्ष्मीचन्द जी का लड़का श्रीपति कालेज से आ गया। उन्होंने फूलचन्दजी से उसका परिचय करवाया—



यही है मेरा बेटा श्रीपति। इसी वर्ष कालेज से बी.फॉर्म पास किया है।

श्रीपति को गौर से देखते हुए फूलचन्दजी ने कहा—



रूप-रंग, शील-स्वभाव सबमें आपकी छाया लगती है।

अजी, छाया ही नहीं। बाप से बेटा सवाया है। सब कामों में होशियार, व्यवहार में चतुर है हमारा श्रीपति।

मुनीम जी की बात सुनकर सब हँसने लगे।

फिर सेठ फूलचन्दजी ने कहा—



ऐसी ही है मेरी बेटी मोहिनी। भगवान ने इनकी जोड़ी के लिये ही उसे बनाया लगता है।

तभी फूलचन्दजी मुनीम ने एक बड़ा फोटो निकालकर सेठ लक्ष्मीचन्द के आगे कर दिया। सेठजी बहुत देर तक फोटो देखते रहे। फिर बोले—



वाह ! साक्षात् लक्ष्मी है यह। दोनों की जोड़ी बहुत अच्छी लगेगी। अब जरा सेठानी जी से और पूछ लें। कल हम आपको उत्तर देंगे।

सेठ फूलचन्दजी जल पान आदि करके कुछ देर बाद वापस चले गये।

कुछ दिन पश्चात् सेठ लक्ष्मीचन्द ने फूलचन्दजी को अपनी तरफ से विवाह की स्वीकृति भेज दी। शीघ्र ही शुभ मुहूर्त में श्रीपति का पाणिग्रहण मोहिनी के साथ हो गया।



शादी के बाद श्रीपति और मोहिनी पहाड़ी स्थानों पर घूमने-फिरने चले गये।

शादी के तीन महीने बीत जाने के बाद एक दिन सेठ लक्ष्मीचन्द ने श्रीपति से कहा—



बेटा! अब व्यापार में ध्यान दो।  
और बहू भी सास के काम में हाथ  
बँटायेगी तो आराम मिलेगा।

तभी सेठानी कमला बोली—

अजी, आपको तो कमाई की पड़ी  
है। जवानी के दिन बेटे के  
खाने-पीने, मौज-शौक के दिन हैं।  
धन्धा तो सारी उम्र करना है।

बात कमाई की नहीं है।  
मेरे सामने ही व्यापार  
समहाल लेगा तो, इसे  
कोई तकलीफ नहीं पड़ेगी।



श्रीपति ने कहा—

पिताजी! आप चिन्ता  
मत कीजिये। मैंने  
बी. कॉम. किया है बस  
जिस दिन दुकान पर  
बैठूँगा, सब कुछ  
समहाल लूँगा।



ठीक है बेटा! जैसी तुम्हारी  
इच्छा। परन्तु व्यापार में डिग्री  
नहीं, अनुभव काम आता है।